डॉक्टर-मरीज़ सम्बंध

डॉ. नरेश पुरोहित

एक चिकित्सक की सबसे पहली ज़िम्मेदारी क्या हो? इस सम्बंध में आज से लगभग 2500 साल पहले यूनानी चिकित्सक प्रीमियम नान नोकरे की शपथ ध्यान देने योग्य है। उन्होंने कहा था "सबसे ज़रूरी यह कि जानबूझकर नुकसान नहीं पहुंचाना।"

चिकित्सक और मरीज़ का सम्बंध आपसी विश्वास पर आधारित होता है। इसलिए एक मरीज़ सामान्यतया तब तक उसी चिकित्सक से परामर्श लेता रहता है जब तक कि परिस्थितियां और अनुभव उसे अन्यत्र जाने को बाध्य न कर दें। मरीज़ का अपने चिकित्सक पर निशंक भरोसा रखना ठीक होने की राह में पहला व अहम कदम है।

चिकित्सकों के खिलाफ समुचित इलाज न करने, उपेक्षा और लापरवाही बरतने की शिकायत हमेशा से रही है। परन्तु उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 से मरीज़ों (सशुल्क इलाज का उपभोक्ता) में आशा का संचार हुआ है। चिकित्सा व्यवसाय के कुछ सदस्यों के तीव्र विरोध या अनमने समर्थन के बावजूद यह अधिनियम मरीज़ या उसके परिवार के लिए न्याय पाने का अंतिम अस्त्र बना हुआ है। अभी तक इस अधिनियम के तहत बालिग मरीज़ ही अपने मसले उठा सकते थे। लेकिन इलाज सम्बंधित किसी नाबालिग मरीज़ के माता-पिता को भी मुआवज़े का हकदार बताने सम्बंधी सर्वोच्च न्यायालय का ताज़ा फैसला बेहतर उपभोक्ता न्याय की दिशा में एक कदम है।

विकसित देशों जैसे अमरीका में चिकित्सा लापरवाही के मुकदमे काफी आम हैं। इसलिए चिकित्सक, सर्जन जैसे चिकित्सा व्यवसाय से जुड़े लोग अभियोग प्रकरण से खुद को बचाने के लिए बीमा कराते हैं। इन प्रकरणों में हज़ारों डॉलर खप सकते हैं और व्यक्ति बर्बाद हो सकता है। यह सच है कि इससे चिकित्सा सुविधा महंगी हुई है लेकिन कानूनी अभियोग से बचने के लिए चिकित्सकों ने अधिक सावधानी की ज़रूरत महसूस की है। ये अभियोग चिकित्सा की प्रतिष्ठा को तो हानि पहुंचाते ही हैं। साथ ही बार-बार अभियोग लगने से बढ़ने वाली प्रीमियम राशि के कारण शुल्क देकर इलाज प्राप्त करने वाले उपभोक्ता पर भारी आर्थिक बोझ भी पड़ता है।

अमरीका में मरीज़ या उसके परिवारजनों से बातचीत करते समय चिकित्सा व्यवसायी मरीज़ को लेकर उसके पास उपलब्ध तमाम विकल्प सामने रख देते हैं। इलाज सम्बंधी इन तमाम विकल्पों में चुनाव की ज़िम्मेदारी मरीज़ पर छोड़ दी जाती हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि चिकित्सक या अन्य चिकित्सा व्यवसायी ऐसी किसी भी बात को जो बाद में एक दुखद आश्चर्य के रूप में सामने आ सकती है, मरीज़ या उसके परिवार से छिपाने की कोशिश नहीं करते। मरीज़ और उसके परिवारजनों के सभी सवालों का जवाब गम्भीरता से दिया जाता है।

भारत में चिकित्सा व्यवसाय से जुड़े अधिकांश चिकित्सक काफी व्यस्त नज़र आते हैं। उनके पास मरीज़ को सरल भाषा में मर्ज़ बताने का समय नहीं होता। और शायद ही मरीज़ या उसके परिवार को वैकल्पिक चिकित्सा की जानकारी दी जाती है।

अक्सर मरीज़ की स्थिति को अति गम्भीर बताते हुए उस पर तुरन्त उपचारी कर्मकाण्ड होने लगते हैं। ऐसी गम्भीर विशेषज्ञ चेतावनियों